श्री त्रिपुरसुंदरी स्तोत्रं 2

श्री त्रिपुरसुंदरी स्तोत्रं 2

श्वेतपद्मासनारूढां शुद्धस्फटिकसन्निभां |
वंदे वाग्देवतां ध्यात्वा देवीं त्रिपुरसुंदरीं || 1 ||

शैलाधिराजतनयां शंकरप्रियवल्लभां |
तरुणेंदुनिभां वंदे देवीं त्रिपुरसुंदरीं || 2 ||

सर्वभूतमनोरम्यां सर्वभूतेषु संस्थितां |
सर्वसंपत्करीं वंदे देवीं त्रिपुरसुंदरीं || 3 ||

पद्मालयां पद्महस्तां पद्मसंभवसेवितां |
पद्मरागनिभां वंदे देवीं त्रिपुरसुंदरीं || 4 ||

पंचबाणधनुर्बाणपाशांकुशधरां शुभां |
पंचब्रह्ममयीं वंदे देवीं त्रिपुरसुंदरीं || 5 ||

षट्पुंडरीकनिलयां षडाननसुतामिमां |
षट्कोणांतःस्थितां वंदे देवीं त्रिपुरसुंदरीं || 6 ||

हरार्धभागनिलयामंबामद्रिसुतां मृडां |
हरिप्रियानुजां वंदे देवीं त्रिपुरसुंदरीं || 7 ||

अष्टैश्वर्यप्रदामंबामष्टदिक्पालसेवितां |
अष्टमूर्तिमयीं वंदे देवीं त्रिपुरसुंदरीं || 8 ||

नवमाणिक्यमकुटां नवनाथसुपूजितां |
नवयौवनशोभाढ्यां वंदे त्रिपुरसुंदरीं || 9 ||

कांचीवासमनोरम्यां कांचीदामविभूषितां |
कांचीपुरीश्वरीं वंदे देवीं त्रिपुरसुंदरीं || 10 ||

इति श्री त्रिपुरसुंदरी स्तोत्रं |